Toppersnotes
Unleash the topper in you

# ACF-RANGER

**सहायक वन सरंक्षक /वन रेंज ऑफिसर ग्रेड – 1**

## राजस्थान का इतिहास

## एवं

## संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

# राजस्थान का इतिहास


1. राजस्थान की सभ्यतायें 1
2. मध्यकालीन इतिहास (मेवाड का इतिहास) 10
3. मारवाड का राठौड वंश 29
4. बीकानेर के राठौडो का इतिहास 39
5. चौहानों का इतिहास 44
6. रणथम्भौर, जालौर, सिरोही, बूंदी और कोटा के चौहानों का इतिहास 49
7. झालावाड का इतिहास 56
8. आमेर के कछवाहा वंश का इतिहास 56
9. अलवर, भरतपुर, डौरालमेर और करौली का इतिहास 65
10. आधुनिक राजस्थान का इतिहास, 1857 की क्रांति 70
11. राजस्थान में किसान एवं जनजाति आन्दोलन 74
12. प्रमुख जनजातीय आन्दोलन 78
13. प्रजामण्डल आन्दोलन 80
14. राजस्थान का एकीकरण 89

# राजस्थान की कला एवं संस्कृति


1. प्रमुख त्यौहार 95
2. राजस्थान के लोकदेवता 109
3. राजस्थान के लोकदेवियां 115
4. लोकसन्त 120
5. सम्प्रदाय 125
6. लोकगीत 129
7. लोकगायन शैलियां 131
8. संगीत घरानें 132
9. लोक नाट्य 135
10. राजस्थान की प्रमुख जनजातियां 147
11. चित्रकला 153
12. आधुनिक चित्रकार 159
13. हस्तकला 162
14. पुरातात्विक स्थल 165
15. राजस्थान का साहित्य 172
16. राजस्थान की प्रमुख बोलियां 178
17. महत्वपूर्ण किलों व स्मारक 182
18. जिले व धार्मिक स्थल 197
19. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 202
20. आभूषण व वेशभूषा 212
21. राजस्थान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पर्यटक स्थल 216

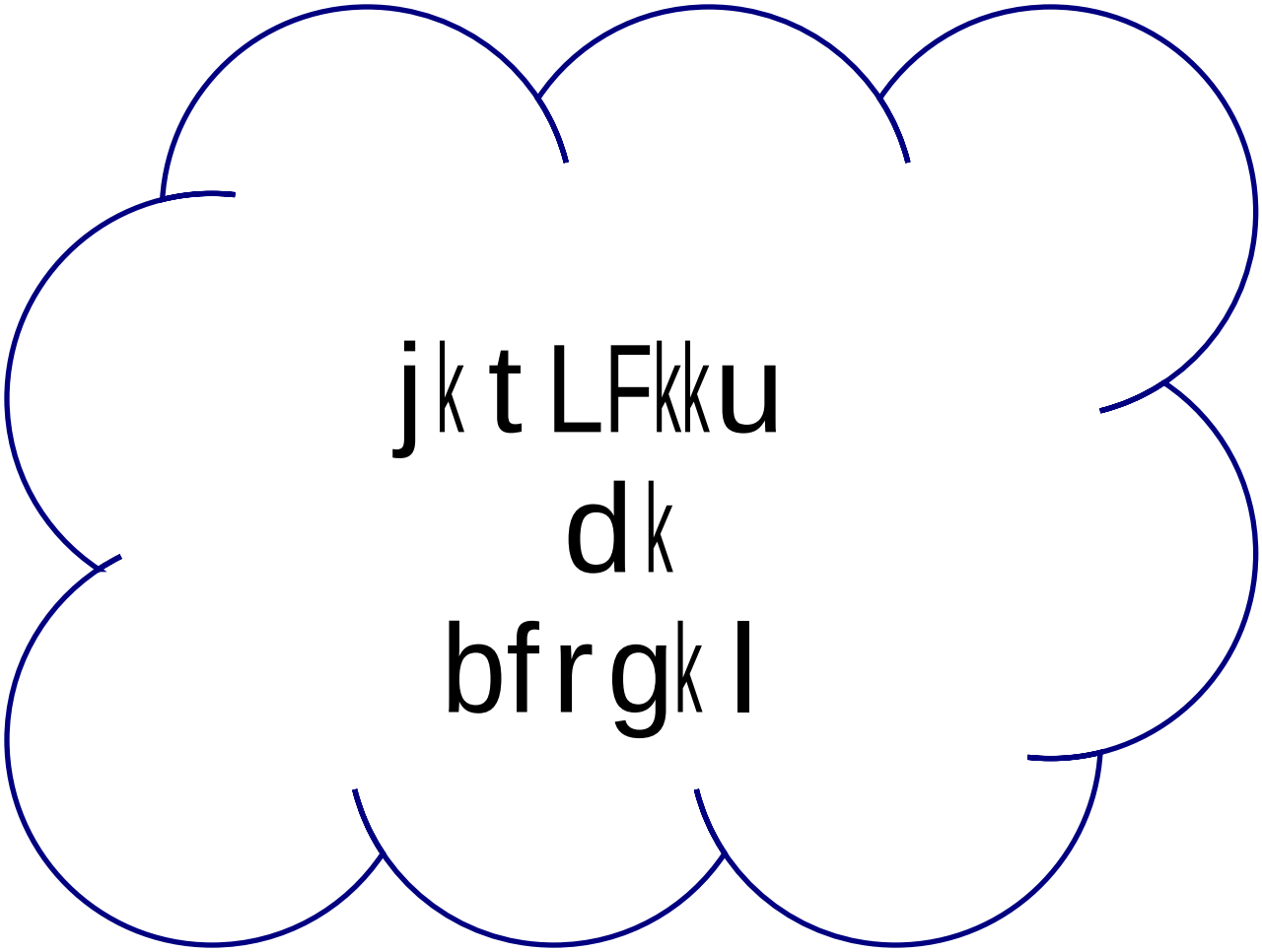
jkt LFkku
dk
bfrgkl

# राजस्थान की सभ्यताएँ

(1) कालीबंगा सभ्यता –

नदी – घग्घर/सरस्वती/मृत नदी/नट नदी

स्थान – हनुमानगढ

- यहां पीलीबंगा सभ्यता थी ।

## लुईस पी तौरी –

- इन्होंने कालीबंगा सभ्यता के बारे में सर्वप्रथम जानकारी दी । अर्थात सबसे पहले जानकारी दी । लेकिन खोज नहीं की ।
- भाषाशास्त्री विद्वान थे । ये पुरातत्ववेत्ता भी थे, जन्म इटली के पुदीन कस्बे में 1887 में
- लगभग 1900 ई. में ये भारत आये । यह बीकानेर रियासत में सबसे पहले आये थे, तथा वहां के राजा गंगासिंह ने इन्हें अपने राज्य का चारण साहित्य लिखने को दिया ।
- बीकानेर में ''गंगा गोल्डन जुबली'' एक संग्रहालय है, जो इन्होंने ही बनवाया ।

- इस सभ्यता की खोज सर्वप्रथम, अमलानंद घोष ने 1952 में की थी ।
- इसके बाद 1961 – 1969 तक के बीच में बृज वासी लाल (बी.बी.लाल) और बी. के. थापर (बालकृष्ण थापर) ने खोज की ।

इस सभ्यता का समय –

- C – 14 के अनुसार – 2350 – 1750 B.C
- ''कालीबंगा'' शब्द – एक सिंधी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है ''काले रंग की चूडियां'' ।
- यहां से काले रंग की चूडियों के ढेर मिले है । इसलिये इसे कालीबंगा कहते है ।
- यह स्वतंत्र भारत का पहला स्थल था, जिसकी खुदाई स्वतंत्रता के बाद सर्वप्रथम की गई ।
- यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी ।
- हनुमानगढ जिले से इस सभ्यता से सम्बन्धित जितनी भी सामग्रियां मिली है, उन्हें सुरक्षित रखने के लिये राज्य सरकार ने 1985 में यहां पर ''कालीबंगा संग्रहालय'' की स्थापना की है । हनुमानगढ जिले में इसका उद्घाटन किया गया था ।

विशेषताएँ –

- सडके समकोण पर काटती है । इसलिये यहां पर एक जाल बन जाता है ।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंटों के बने होते थे ।
- ईंटों का आकार – 30 x 15 x 7.5
- मकानों के दरवाजे व खिडकी सडक की ओर न खुलकर पीछे की ओर खुलते थे ।
- नालियां ''काष्ठ (लकडी) की बनी होती थी, पहले/बाद में आगे चलकर ये पत्थर की बनी होती थी
- यहां पर विश्व के प्राचीनतम जुते हुये खेत के प्रमाण मिले है ।
- विश्व के प्राचीनतम भूकंप के साक्ष्य भी यही से प्राप्त हुये है, क्योंकि मकानों की दीवारों पर दरारें मिली है । इसलिये अनुमान यह लगाया जाता है, कि इस सभ्यता का समापन किसी प्राकृतिक आपदा से हुआ है ।

- यहां से यज्ञकुण्ड/अग्निकुण्ड वेदिकायें प्राप्त हुई हैं । यहां पर बलि प्रथा भी विद्यमान थी ।
- यहां का प्रिय जानवर कुत्ता था, यहां के लोग – ऊँट, गाय, घोडा, बकरी, भेड, कौंआ से भी परिचित थे ।
- यह एक नगरीय सभ्यता है । विश्व में प्राचीनतम नगरों के प्रमाण यहीं पर मिले हैं ।
- यहां पर मूर्ति/देवी, देवता के पूजन/चित्राकंन का कोई प्रमाण नहीं मिला है ।
- यहां पर 卐 चिह्न के प्रमाण मिले हैं ।
- कालीबंगा का मैसोपोटामियां की सभ्यता के समकालीन होने का प्रमाण ''बेलनाकार बर्तन'' है ।
- एक कपाल के छः प्रकार के छेद मिलते हैं । इससे अन्दाजा लगाया जाता है, कि यहां के लोग शल्य चिकित्सा से परिचित थे ।
- सर्वप्रथम विश्व के शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रकार यही मिलते हैं ।
- यहां पर सिक्कों पर एक तरफ व्याघ्र (चीता) तथा दूसरी तरफ किसी देवी का चित्र था, इसलिये यह अनुमान लगाया जाता है कि यहां पर मातृसत्तात्मक प्रणाली थी ।
- यहां के लोग 卐 चिह्न का प्रयोग ''वास्तुदोष'' को दूर करने के लिये करते थे ।
- कालीबंगा को सिंधु सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता है ।
- यहां के लोग मध्य एशिया के साथ व्यापार करते थे ।
- यहां के लोग ''सामूहिक तंदूर'' का प्रयोग करते थे, जो मध्य एशिया की संस्कृति से सम्बन्धित है
- काफी सजावट के साथ यहां फर्श मिले है ।

(2) आहड सभ्यता –

- स्थान – आहड नामक स्थान, जिला – उदयपुर, इस सभ्यता का सर्वप्रथम उत्खनन आहड में हुआ
- नदी – आयड नदी के किनारे – किनारे / यह नदी पहाडियों से निकलती है, फिर उदयपुर की उदयसागर झील में गिरती है, यहां इसका नाम बेडच नदी हो जाता है । यह नदी बनास नदी की सहायक है । इसलिये कहा जाता है, यह सभ्यता बनास के/आयड नदी के/बेडच नदी के किनारे विकसित हुई ।

<u>प्राचीन नाम ''आहड''</u>

(1) ताम्रवती नगरी – (कारण – यहां के लोगों का व्यापार अधिकांश तांबा पर निर्भर था । उपकरण, कुल्हाडी सभी तांबे के बनाये जाते थे । यहां पर तांबे की बडी–बडी खाने भी थी ।)
(2) आघाटपुर – (कारण – यहां एक दुर्ग मिला है, जिसका नाम है आघाट दुर्ग ।

<u>आहड सभ्यता के उपनाम</u> –

(1) बनास संस्कृति/आहड संस्कृति – यह नाम ''धीरज लाल सांकलिया'' ने दिया था, एक पुरातत्ववेत्ता थे । इन्होंने इस सभ्यता का 1961–1962 में उत्खनन का कार्य किया था । इन्होंने ही बताया कि यह सभ्यता बनास नदी के किनारे पनपी है ।
    - यहां पर एक गहरा खड्डा (40 फीट का) मिला है । यह खड्डा धीरज लाल सांकलिया ने खोदा था । इन खड्डों से प्रमाण मिलते है कि यह सभ्यता 8 बार बसी थी । इसलिये इस सभ्यता को मृतकों का टीलें की सभ्यता भी कहते है ।
    - यहां से मिली चीजों के आधार पर अनुमान लगाया गया कि यह एक ग्रामीण सभ्यता थी । न कि नगरीय ।

उत्खनन कार्य –

(1) सर्वप्रथम – "पण्डित अक्षय कीर्ति व्यास" (पहले उत्खननकर्ता), सर्वप्रथम आहड़ सभ्यता का उत्खनन करवाने का श्रेय इन्हें जाता है ।

(2) दूसरे – रतन चन्द्र अग्रवाल (आर.सी. अग्रवाल), इन्होंने इस सभ्यता का सबसे ज्यादा उत्खनन का कार्य करवाया । यहां पर एक सबसे बडा टीला था । इसका उत्खनन कार्य भी इन्होंने ही करवाया था, बाद में पता चला कि यहां के पुराने निवासी इसे "धूलकोट" का टीला कहकर पुकारते थे । आहड़ मेवाड़ रियासत की राजधानी भी रही है ।

(3) तीसरे – वी.एन. मिश्रा एवं धीरज लाल सांकलिया, ये पूना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे, भारत सरकार ने इन्हें यहां भी उत्खनन के लिये 1961–1962 में नियुक्त किया ।

(4) चौथे – विजय कुमार एवं पी.सी. चक्रवती, डॉ. विजय कुमार एवं पी.सी. चक्रवती को राजस्थान सरकार ने यहां पर खुदाई के लिये नियुक्त किया था ।

धूलकोट (एक स्थानीय टीला)

- यह आहड़ सभ्यता का वह पुरातात्विक स्थल है, जिस पर सर्वाधिक उत्खनन का कार्य डॉ. रतन चन्द्र अग्रवाल ने किया । यही पर सर्वाधिक प्रत्यक्ष प्रमाण मिले है । यह एक स्थानीय नाम है । अर्थात् यहां के लोग इसे धूलकोट कहकर पुकारते थे ।
- आहड़ सभ्यता का सर्वप्रथम ज्ञात आहड़ के पास उत्खनन से होता है । अर्थात् सर्वप्रथम खुदाई आहड़ में ही की गई थी ।

विशेषतायें –

(1) मकान – कच्ची ईंटों से निर्मित थे । यहां के अधिकांश मकान आयताकार रूप में थे ।

(2) सामूहिक भोजन व्यवस्था के प्रमाण यहां मिले है । अर्थात् कई सारे समाज/लोग एक साथ एक स्थान पर बैठकर खाना पकाते थे ।
   - क्योंकि यहां खुदाई के दौरान एक मकान में एक से अधिक चूल्हे मिले है ।
   - एक मकान में 6 चूल्हे मिले है ।
   - एक चूल्हे पर मानव की हथेली के निशान मिले है ।

(3) यहां बिना हत्थे का जलपात्र मिला है । बिल्कुल ऐसा ही जलपात्र ईरान में और बलूचिस्तान में भी मिला है, इसका सम्बन्ध ईरान से भी था ।

(4) गोरे व कोठे – आहड़ के लोग खेतों से अनाज लाकर अपने घरों में सुरक्षित जिस स्थान पर रखते थे उसे गोरे व कोठे कहते थे । अर्थात् – अनाजसंग्रहालय को कोठे या गोरे कहते थे । अर्थात् गोरे व कोठे का सम्बन्ध आहड़ सभ्यता से है । ये मिट्टी के बने होते थे, इसलिये इनको मृदभाण्ड भी कहते थे ।

(5) उद्योग व आहड़वासियों का उद्योग (सबसे बडा) – तांबे का था, ये तांबे के अस्त्र व शस्त्र व तांबे के कुल्हाडे बनाते थे ।
   - तांबा को गलाने की भट्टी इसी सभ्यता से मिली है । जो कि तांबे की ही बनी है । गणेश्वर सभ्यता में तांबे के अस्त्र व शस्त्र मिले है, लेकिन वहां तांबे को गलाने की भट्टी नहीं मिली है, यह केवल और केवल आहड़ से/आहड़ सभ्यता से मिली है ।

- अन्तिम संस्कार के कई तरीके मिले/ये शव को जलाते नहीं थे बल्कि उनको खड्डे में गाडते थे । मुंह को उत्तर दिशा में रखते थे । कपडों और आभूषणों के साथ शव गाडते थे । ऐसा केवल यही के लोग करते थे । यह यहां की प्रमुख विशेषता थी ।
- वहां के लोग कृषि से परिचित थे । ऐसा गोपीनाथ शर्मा कहते है । यहां पर फसल के सिर्फ 2 प्रकार के प्रमाण मिलते है – (1) ज्वार (2) चावल
- यहां सिलाई व छपायी भी करते थे । अर्थात् यहां के लोग रंगाई छपाई के व्यवसाय से परिचित थे ।
- यहां पर एक ''चक्रकूप'' पद्धति है । यहां के लोग जल घरों में पानी भरने के लिए घरों में एक गहरा खड्डा खोदते थे (4 फुट के आसपास) फिर इसमें एक के ऊपर एक घडा रख देते थे । और ये घडे पानी सोख लेते थे । ये घडों में मिट्टी डाल देते थे । जो पानी को सुखा देती है । यह एक आहड की वैज्ञानिक पद्धति थी । इसे चक्रकूप पद्धति कहते थे ।

<u>गणेश्वर</u> –

स्थान – गणेश्वर (सीकर) थाना ''नीम का थाना''

- नदी – काँतली नदी – यह एक आन्तरिक प्रवाह वाली नदी है । कांतली इसलिये कहते है क्योंकि यह अपरदन ज्यादा करती है ।

उपनाम –

(1) ताम्रसंचयी सभ्यता –

- ताम्रकालीन सभ्यताओं में सबसे प्राचीन सभ्यता गणेश्वर सभ्यता ही है ।
- भारत सभी ताम्रकालीन सभ्यताओं की जननी भी ''गणेश्वर सभ्यता'' ही कहते है । यहां तांबा सर्वाधिक मात्रा में मिला है ।

<u>उत्खननकर्ता</u> –

(1) रतन चन्द्र अग्रवाल – गणेश्वर सभ्यता का सर्वप्रथम उत्खनन कार्य 1977 में आर.सी. अग्रवाल (इन्होंने धूलकोट का उत्खनन किया था) ने किया था । अर्थात् इस सभ्यता को प्रकाश में लाने का श्रेय इन्हीं को जाता है ।

काल – रेडियों कार्बन अनुसार 2800 BC बताया गया है ।

<u>प्रमुख विशेषतायें</u> –

(1) यहां सर्वाधिक ताम्र उपकरण मिले है । जैसे – बाणाग्र, चूडियां, फरसे, कुल्हाडी, मछली पकडने का कांटा, तीर, भाले, सुईयां, मछलियां कांतली नदी में पकडते थे । ये मांसाहारी थे । इन सब औजारों में 99 प्रतिशत तांबा होता था । अर्थात् ये लोग तांबे में अन्य धातु को नहीं मिलाते थे । अर्थात् वे लोग तांबे के साथ अन्य धातुओं के मिश्रण करना नहीं जानते थे ।

- यहां के मकान पत्थरों से मिश्रित है । इनमें ईंटों का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया गया है । अर्थात् ये मकान पक्के थे ।
- यहां पर जो भी मृदभाण्ड मिले है, उन्हें कृषणवर्णी मृदभाण्ड कहा गया है ।
- भारत में पहली बार ताम्र उपकरण एक साथ किसी स्थान पर नहीं प्राप्त हुये है, इसे ताम्र सभ्यता की जननी कहा जाता है ।

(4) नगरी सभ्यता (नगरी – चित्तौडगढ जिला)

नदी – बेडच नदी (चित्तौडगढ इसी नदी के किनारे बसा है ।)

- नगरी का प्राचीन नाम – मध्यमिका (मेवाड के शिवि जनपद की राजधानी थी)
- यहां प्राप्त सिक्को पर – मज्झमिकाय शिवि जनपद राज्य लेख उत्कीर्ण है । ये सिक्के नगरी से मिलते है ।
- पाणिनी ने इस सभ्यता का उल्लेख किया है । केवल ऐसा यह एकमात्र स्थल है ।
- उत्खननकर्ता – 1904 ई. में सर्वप्रथम डॉ. डी.आर. भण्डारकर द्वारा उत्खनन किया गया था ।

उत्खनन से प्राप्त सामग्री –
शिलालेख –

- इस शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. भण्डारकर द्वारा पढा गया ।
- यह शिलालेख राजस्थान में वैष्णव समुदाय का सबसे प्राचीन शिलालेख है ।

हाथीबाडा शिलालेख –

- 1887 ई. में सर्वप्रथम ये दोनों शिलालेख श्यामलदास दधिवाडिया द्वारा खोजे गये ।
- यहां नगरी से दो शिलालेख और एक मंदिर मिला है ।
- इस मंदिर में कृष्ण व बलराम की पूजा के साक्ष्य मिले है ।
- यह मंदिर राजस्थान में वैष्णव संप्रदाय का सबसे प्राचीन मंदिर है, यह द्वितीय ई.पू. शताब्दी का शुंगकालीन मन्दिर है ।
- यह सर्वप्रथम डॉ. भंडारकर द्वारा खोजा गया ।

(5) बागौर की सभ्यता –
स्थान – बागौर (भीलवाडा)
नदी – कोठारी नदी के किनारे विकसित हुई थी ।
उत्खननकर्ता – डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र एवं इनके सहयोगी डॉ. एल.एस. लेश्विक

- यहां पर आहड सभ्यता के समान अवशेष प्राप्त हुये है ।
- यहां पर जिसका उत्खनन किया गया था, उसका नाम था ''महासतियों का टीला'' अर्थात् बागौर सभ्यता का पुरातत्व स्थल है (सर्वप्राचीन)
- राजस्थान में और भारत में भी कृषि और पशुपालन के सबसे प्राचीनतम प्रमाण यही से मिले है (बागौर से)
- बागौर में जो भी उपकरण/अवशेष मिले है वे मध्यपाषाण काल के है ।
- यहां के लोग पत्थरों से अपने औजार तथा शस्त्र बनाते थे, इसलिये इस सभ्यता को ''आर्थिक संस्कृति का संग्रहालय'' कहा गया है ।

(6) रैढ सभ्यता –
स्थान – रैढ, जिला – टोंक, नदी – ढील नदी के किनारे

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी, केदारनाथपुरी
  - ''मालव गणराज्य के सिक्के'' यही से मिले हैं, यहां के जो सिक्के मिले हैं, उन पर मालव जनदस्य शब्द लिखा हुआ है । अर्थात् यहां का क्षेत्र मालव जनपद में आता था ।
  - चांदी की आहात मुद्राये/पंचमार्क सिक्के भी यही से मिले है ।
  - लौह सामग्री – यहां पर मिलती है ।
  - एशिया में अब तक सिक्कों का सबसे बडा भण्डार यही पर मिला है । लगभग चांदी की 3075 मुद्रायें मिली है ।
  - भारत में अब तक एक ही स्थान पर सर्वाधिक चांदी के पंचमार्क सिक्के यही से मिले है । इसलिये रैढ सभ्यता को ''प्राचीन भारत/राजस्थान का टाटानगर'' कहते है ।

- मृण्मूर्तियों (टेराकोटा) पर मथुरा कला की छाप यही से मिलती है ।
- यहां पर आलीशान इमारतों के अवशेष भी मिले है ।

(7) रंगमहल की सभ्यता –

स्थान – हनुमानगढ जिला, स्थल– रंगमहल, नदी – सरस्वती/घग्घर

- यहां तीन सभ्यता के अवशेष मिले है –
  - सैंधव सभ्यता के अवशेष
  - कुषाण कालीन सभ्यता
  - पूर्व गुप्त कालीन सभ्यता के अवशेष
- यहां के लोग युद्ध पद्धति के थे । इसलिये इस स्थल का नाम – यौद्धेय गणराज्य पडा, इसकी राजधानी रंगमहल थी ।
- यहां पर मूर्तियां मिली उन पर (मृण्यमूर्तियों पर) गांधार शैली की छाप मिलती है । रैढ सभ्यता में मथुरा कला की छाप मिलती है ।
- यहां पर कुछ पंचमार्क सिक्के भी मिले है । लेकिन सर्वाधिक रैढ में मिलती है ।

- यहां पर चावल की खेती के प्रमाण मिले है । यह यहां के लोगों का मुख्य भोजन व मुख्य कृषि थी ।

काल – (1000 B.C – 300 तक)

- उत्खननकर्ता – स्वीडन देश के एक डॉट ''हन्नारिड'' के निर्देशन में

(8) पीलीबंगा की सभ्यता –

स्थान – हनुमानगढ

नदी – सरस्वती/घग्घर

- यही पर सिंधु सभ्यता के अवशेष मिले है ।
- यहां पर एक विशेष प्रकार का घडा मिला है, जिसके दो तरफ ''घुमन्द'' है तथा आगे से बिल्कुल है, और नीचे से पेट बहुत बडा है ।
- लोक देवता बाबा रामदेव का मंदिर इस सभ्यता से मिला है ।
- इसी सभ्यता से ''पीपल के वृक्ष'' का प्रमाण मिला है ।

(9) बैराठ सभ्यता/विराट नगर सभ्यता

स्थान – विराटनगर (जयपुर), नदी – बाणगंगा नदी/अर्जुन की गंगा के किनारे

- यहां पर मत्स्य जनपद की राजधानी बैराठ थी, जिसका वर्तमान नाम ''विराट नगर'' है ।
- इस बैराठ का उल्लेख सर्वप्रथम महाभारत में मिलता है ।
- जयपुर के शासक ''सवाई रामसिंह द्वितीय'' ने (इनके शासन काल में 1857 की क्रांति हुयी तथा इन्हीं के काल में 1876 में प्रिंस वेल्स ऑफ अल्बर्ट ने जयपुर की यात्रा की और उन्होंने इसको गुलाबी रंग से रंगवाया) ही सर्वप्रथम बैराठ सभ्यता का उत्खनन करवाया/खनन कार्य में यहां एक 'सोने का कलश'' मिला, इससे यह अनुमान लगाया गया कि इसमें ''भगवान बुद्ध'' की अस्थियों के अवशेष थे ।
- उत्खननकर्ता – (रायबहादुर दयाराम साहनी 1936–1937)
- इस स्थल का सर्वेक्षण सर्वप्रथम ''कैलाश दीक्षित एवं इनके सहयोगी ''नील रत्न बनर्जी'' ने किया, इससे पहले उत्खनन रायबहादुर साहनी ने की ।
- यहां तीन प्रकार की पहाडियों मिलती है –

(1) बीजक की पहाडी –

अशोक का शिलालेख "भाब्रु का शिलालेख प्रथम" यही पर खोज गया । यहां पर भाब्रु शिलालेख द्वितीय खोजा गया

- सन् 1837 में एक अंग्रेज अधिकारी कैप्टन टॉबर्ट/बर्ट ने सम्राट अशोक का शिलालेख बीजक की पहाडी से खोजा । दूसरा शिलालेख एक अंग्रेज अधिकारी "कालाईल" ने 1871–72 में खोजा
- वर्तमान में शिलालेखों को इस पहाडी में से काटकर "कोलकत्ता संग्रहालय" में 1840 ई. में रख दिये थे ।
- यह शिलालेख प्रथम "बूस्टोफीदन शैली" में खुदा हुआ है । इसी शिलालेख में 'धम्भ, संघ, 'बुद्ध' तीन शब्द मिलते है । इसी शिलालेख में अशोक द्वारा गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाने का प्रमाण मिला है । इसी में अशोक को मगध का राजा बताया गया है । इसी शिलालेख में अशोक को बौद्ध धर्म का अनुयायी बताया गया है ।
- इसी बीजक की पहाडी से सोने का कलश मिला है, कहा जाता है कि इसमें गौतम बुद्ध की अस्थियों के अवशेष मिले है ।
- बीजक की पहाडी की खोज टॉबर्ट/बर्ट द्वारा की गई/कर्नल जेम्स टॉड ने बताया कि यहां के लोग इसे डूंगरी कहते थे, लेकिन टॉबर्ट को बीजक के नाम से संबोधित करते थे, इसलिये इस पहाडी का नाम बीजक रख दिया ।
- यहां पर 1919 में इस पहाडी पर बौद्ध मंदिर मिले है ।
- 1932 में यहां एक स्तूप मिला है, जो हीनयान शाखा से सम्बन्धित है ।
- यहीं पहाडी से मथुरा शैली में गौतम बुद्ध की प्रतिमा मिली है ।

## सुनारी सभ्यता

स्थान – सुनारी, जिला (झुंझुनू)
उत्खनन – 1980–81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा ।

- लौह अयस्क से लोहे की भट्टियों के बनाने के सर्वप्रथम प्रमाण राजस्थान और पूरे भारत में सुनारी सभ्यता/स्थान से मिली है ।
- इसी स्थान में "लौह का बना कटोरा" व लोह के तीर व लोहे के भाले यहीं से मिले है । ये ऐसे अवशेष है, जो मौर्यकालीन सभ्यता से सम्बन्धित है । अर्थात् यह सभ्यता मौर्यकाल से सम्बन्ध रखती है ।
- राजस्थान में मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष निम्न सभ्यताओं/स्थल से मिले है – विराट नगर, सुनारी, नोह (भरतपुर), जोधपुरा (जयपुर)
- राजस्थान में शुंग एवं कुषाण कालीन अवशेष भी इसी सुनारी नामक स्थान पर मिलते है ।

## बालाथल सभ्यता –

स्थान – वल्लभनगर, तहसील स्थान– बालाथल, जिला– उदयपुर

- लोहे के प्रमाण लगभग 12 ई. पूर्व में यही से मिले है ।
- यहां एक कंकाल मिला है, जा भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुराना प्रमाण माना जाता है ।
- राजस्थान में विराटनगर सभ्यता के अलावा बुना हुआ वस्त्र सिर्फ बालाथल सभ्यता से मिला है ।
- बालथल सभ्यता आहड सभ्यता से मिलती जुलती है, क्योंकि यहां से जिस प्रकार गाय और बैल की मृण्यमूर्तियां मिली है, बिल्कुल उसी प्रकार की मृण्यमूर्तियां आहड से भी मिली है ।
- यहां तांबा भी मिला है ।
- यही पर एक 11 भवनों वाला कमरा मिला है ।
- कालीबंगा सभ्यता को हडप्पावासी तीसरी राजधानी (डॉ. दशरथ शर्मा) ने कहा है ।

## ओझियाना सभ्यता

स्थान – ओझियाना, जिला – भीलवाडा

- यहां पर आहड सभ्यता से सम्बन्धित अवशेष प्राप्त हुये हैं ।
- यहां पर जो गायों की एवं बैल की मृण्यमूर्तियां, मिली हैं, वह आहड सभ्यता जैसी है ।
- इन मूर्तियों पर सफेद रंग की डिजाइन मिलती है यह डिजाइन आहड एवं बालाथल में नहीं मिलती

उत्खनन – 2000 – 01 में

- उत्खनन के आधार पर इस सभ्यता का विकास तीन चरणों में हुआ माना गया है । प्रारंभ – 1991 में हुआ और समापन 2000–01 में हुआ
- इसका उत्खनन राजस्थान पुरातत्व विभाग द्वारा किया गया ।

## कुराडा सभ्यता/ओझारों की नगरी

स्थान – कुराडा ग्राम, जिला – नागौर, तहसील – परबतसर

- यहां पर वर्ष 1934 में कुल/लगभग 103 ताम्रपत्र उपकरण प्राप्त हुये, जो पुरातत्व विभाग के लिये एक बडी उपलब्धि थी इसीलिये इसे ओझारों की नगरी कहा जाता है ।
- उत्खनन – 1934 में किया गया ।
- गणेश्वर सभ्यता में भी सन् 1961 में ताम्र उपकरणों की प्राप्ति हुई, अर्थात् राजस्थान में स्वतंत्रता से पहले ताम्र उपकरण केवल कुराडा से प्राप्त हुये थे ।

नोह सभ्यता –

स्थल – नोह, जिला – भरतपुर

नदी – रूपारेल नदी के किनारे इसे अलवर का शोक कहते हैं ।

उत्खनन – 1963–64 आर.सी. अग्रवाल के द्वारा । इनसे यह उत्खनन राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया था ।

- राजस्थान में ''नोह'' एकमात्र ऐसा स्थल है, जहां 5 संस्कृतियों के अवशेष मिले है, महाभारत से ताम्रयुगीन सभ्यता तक
- यहां पर एक पक्षी चित्रित ईंट मिली है ।

## सौथी सभ्यता –

स्थान – सौथी, जिला – हनुमानगढ, नदी – घग्घर/सरस्वती

- यहां से हडप्पाकालीन सभ्यता के अवशेष मिले है । यह सभ्यता कालीबंगा के पास ही है ।
- उत्खननकर्ता – 1953 अमलानंद घोष द्वारा ।
- इस सभ्यता को ''कालीबंगा प्रथम'' नाम अमलानंद घोष द्वारा दिया गया ।

## बरोर सभ्यता –

स्थल – बरोर, जिला – गंगानगर

- उत्खनन – 2003, राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा
- अवशेष – यहां पर शहरी सभ्यता के अवशेष मिले है ।
- यहां पर बटन के समान मोहरें प्राप्त हुई है ।

## मलाह सभ्यता

स्थल – मलाह, जिला – भरतपुर – घना पक्षी अभयारण्य क्षेत्र के मध्य में है ।

- यहां पर लौहकालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं ।
- यहां पर ताम्र हारपून व तलवारें मिली हैं ।
- ताम्र हारपून ऐसा प्रागैतिहासिक काल का हथियार था, जिससे व्हेल मछली/गैंडा या किसी बडे जानवर का शिकार किया जाता था । यह एक भालेनुमा हथियार था ।

<u>अन्य सभ्यता स्थल</u> –

(1) ईसवाल – उदयपुर
(2) डीडवाना – नागौर
(3) एलाना – जालौर
(4) जूनागढ – पाली
(5) लाछूरा – भीलवाडा
(6) गिलूण्ड – राजसमंद
(7) इन्द्रगढ – कोटा
(8) डाडाधौरा – बीकानेर
(9) दर – भरतपुर
(10) तिलवाडा – बाडमेर
(11) ओला व कुण्डा – जैसलमेर

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# मध्यकालीन इतिहास

## (1) मेवाड का इतिहास:

- मेवाड के प्राचीन नाम:

  मेदपाट , प्रागवाट , शिविजनपद

- ''गुहिल वंश'' का शासन था

  566 ई. से प्रारम्भ
  इस वंश की 24 शाखाएँ थी । इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध मेवाड के गुहिल थे ।
  पहला बडा राजा बापा रावल था ।

### 1. बापा रावल :

वास्तविक नाम – '' कालभोज''

यह हारित ऋषि का अनुयायी था । इसने हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 ई. में मान मौर्य (चित्तौड का राजा) को हराकर चित्तौड पर अधिकार कर लिया ।

इसने नागदा (उदयपुर) को राजधानी बनाया ।

बापा रावल ने नागदा में एकलिंगजी का मन्दिर (अभी कैलाशपुरी) बनावाया

Note: मेवाड के शासक स्वयं को एकलिंगजी का दीवान (प्रधानमंत्री) मानते थे ।

बापा रावल ने मेवाड में खुद के नाम के सिक्के चलाये

राजधानी: नागदा, आहड, चित्तौड

बापा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए गजनी तक चला गया था । तथा वहां के राजा सलीम को हरा दिया तथा अपने भांजे को राजा बनाया ।

रावलपिंडी (Pak) शहर का नाम बापा रावल के कारण पडा ।

– सी.वी.वैद्य ने बापा रावल की तुलना फ्रांस का कमांडर चार्ल्स मार्टेल से की है ।

– मेवाड में सोने के सिक्के प्रारम्भ किये । (115 ग्रेन का सिक्का)

उपाधियां –

1. हिन्दू सूरज
2. राजगुरू
3. चक्कवै (चारों दिशाओं को जीतने वाला)

## 2. अल्लट

अन्य नाम – आलु रावल

इसने आहड (उदयपुर) को 2nd राजधानी बनाई

इसने आहड में वराह (विष्णु भगवान का अवतार) मन्दिर बनवाया

सबसे पहले मेवाड में नौकरशाही की स्थापना की ।

इसने हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की थी ।

## 3. जैत्र सिंह : (1213–50)

भूताला का युद्ध (1234 ई. में) ''जैत्र सिंह'' v/s इल्तुतमिश के बीच हुआ इस युद्ध में जैत्रसिंह जीत गया लेकिन इल्तुतमिश ने नागदा (उदयपुर) को उजाड दिया था इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड को अपनी राजधानी बनाया ।

इस युद्ध की जानकारी ''जयसिंह सूरी'' की किताब ''हम्मीर मद मर्दन'' से मिलती है ।

जैत्रसिंह का शासनकाल ''मध्यकालीन'' मेवाड का स्वर्णकाल था ।

## 4. रतन सिंह : (1302–03)

इसका छोटा भाई कुम्भकरण नेपाल चला गया । तथा वहाँ ''राणा शाही वंश'' की स्थापना की । इस तरह से यहाँ गुहिल वंश की एक शाखा बनी ।

1303 में अलाउदीन खिलजी का चित्तौड पर आक्रमण

आक्रमण का कारण :

- अलाउदीन खिलजी की साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा
- चित्तौड का सामरिक व व्यापारिक महत्व
- सुल्तान के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न था
- चित्तौड का बढता हुआ प्रभाव

रानी पद्मिनी :-
सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी थी
पिता :- गन्धर्वसेन

माता :- चम्पावती
भाई :- गोरा

पद्मिनी

सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी थी । (सिंहल यहाँ की जाति थी)
''राघव चेतन'' (रतनसिंह का दरबारी) ने अलाउद्दीन को पद्मिनी की सुन्दरता के बारे में बताया था ।
अलाउद्दीन खिलजी के समय ''चित्तौड में पहला साका'' हुआ
साका = जौहर (महिला) केसरिया (पुरूष)
इस युद्ध में (साके में) ''गोरा व बादल'' (रतन के सेनापति) लडते हुए मारे गये थे ।

रानी पद्मिनी ने जौहर किया
अलाउद्दीन ने चित्तौड पर आक्रमण किया और अपने बेटे ''खिज्र खाँ'' को सौप दिया । तथा चित्तौड का नाम ''खिज्राबाद'' कर दिया ।
खिज्र खाँ ने गंभीरी नदी पर पुल बनवाया था ।
खिज्र खाँ ने यहाँ पर मकबरे का निर्माण करवाया । इस मकबरे के फारसी लेख में अलाउद्दीन खिलजी को धर्म एवं पवित्रता का अवतार बताया गया है ।
थोडे दिनो बाद चित्तौड मालदेव सोनगरा को दे दिया गया ।
मालदेव सोनगरा को मुँछाला मालदेव कहा जाता था ।
अलाउद्दीन ने चित्तौड पर आक्रमण किया और अपने बेटे ''खिज्र खाँ'' को सौप दिया । तथा चित्तौड का नाम ''खिज्राबाद'' कर दिया ।
थोडे दिनों के बाद चित्तौड ''मालदेव सोनगरा'' को दे दिया ।

Note: 1. किताब :- पद्मावत (1540 ई. अवधी भाषा में लिखी गई)
लेखक :- मलिक मुहम्मद जायसी
- जेम्स टॉड तथा मुहणोत नैणसी ने भी इस कहानी को स्वीकार किया ।
सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस कहानी को अस्वीकार किया ।

अमीर खुसरों की पुस्तक 'खजाइन उल फुतुह' (तारीख ए अलाई) में चित्तौड आक्रमण का वर्णन किया गया है ।

2. गोरा बादल री चौपाई

लेखक :- हेमरत्न सूरी (सूरि जैन होते है)
''रावल उपाधि'' का प्रयोग करने वाला ''अन्तिम राजा रतनसिंह'' था ।
नोटः (इसके बाद के सभी राजा आपने नाम के आगे राणा लगाऐंगे)

## 5. हम्मीरः (1326-64) राणा हम्मीर

सिसोदा गाँव (राजस्थान) के हम्मीर ने बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड पर आक्रमण करके चित्तौड को जीत लिया ।
सिसोदा गाँव के कारण ''मेवाड में सिसोदिया शाखा'' (गुहिल वंश) का प्रारम्भ हुआ ।

''राणा'' उपाधि का प्रयोग करने वाला पहला राजा
हम्मीर को ''मेवाड का उद्धारक'' कहा जाता है
(क्योंकि इसमें चित्तौड को अपने कब्जे में लिया था)
इसने ''बरवडी'' (अन्नपूर्णा माता) माता का मन्दिर चित्तौड में बनवाया । यह मेवाड के गुहिल वंश की इष्टदेवी (बरवडी माता) थी ।

(मेवाड के गुहिल वंश की कुल देवी – बाणमाता)

(कुल देवी एक कुल की एक ही होती है तथा इष्ट देवी कुल की शाखाओं के अनुसार अलग – अलग होती है ।)

हम्मीर की उपाधियाँ :

1. ''विषमघाटी पंचानन'' (''कुम्भलगढ प्रशस्ति'' में कहा गया है ।)
2. ''वीर राजा'' ( कुम्भा की पुस्तक ''रसिकप्रिया'' में कहा गया)
(जयदेव की गीतगोविन्द पर टीका)

## 6. राणा लाखा (लक्षा सिंह)

जावर में चाँदी निकलना प्रारम्भ हुई ।

- इसके समय में एक बन्जारे ने ''पिछोला झील'' का निर्माण कराया (बन्जारे उस समय व्यापारी होते थे ।)
इस झील के पास एक ''नटनी का चबूतरा'' मिलता है ।
(नट एक जाति है ।)
कुम्भा हाडा (हाडी रानी का भाई) नकली बूंदी की रक्षा करते हुऐ मारा गया । (लाखा ने ''हाडी रानी'' से शादी की थी).

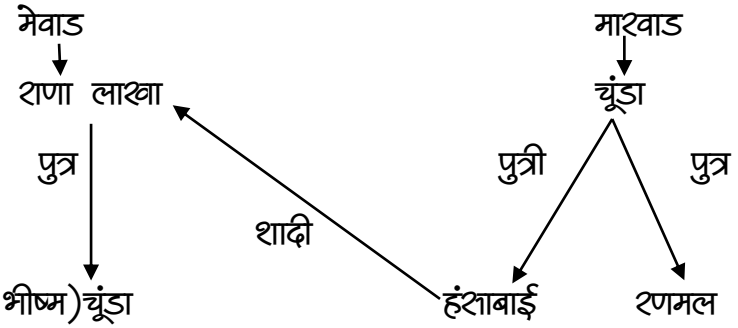


मारवाड के राजा चुन्डा ने अपनी बेटी हंसाबाई की शादी मेवाड के राजा लाखा के साथ की । इस समय लाखा के बेटे चून्डा ने यह प्रतिज्ञा की कि वह मेवाड का राजा नहीं बनेगा । बल्कि हंसाबाई के जो बेटे होंगे उनको बनाऐगा इसलिए चून्डा को ''मेवाड का भीष्म'' कहा जाता है ।

## 7 राणा मोकल (1421–33) (हंसाबाई का बेटा)

मेवाड का चुन्डा ने इसका राजतिलक किया ।
इस त्याग के बदले में चुन्डा को कई विशेषाधिकार (Privilage) दिये गये ।
(1) मेवाड के 16 प्रथम श्रेणी के ठिकानों में से 4 चून्डा को दिये गये । इनमें सबसे बडा ठिकाना ''सलूम्बर'' उदयपुर भी शामिल था ।

(2) सलूम्बर के सामन्त द्वारा मेवाड के राजा का राजतिलक किया जायेगा ।
(3) सलूम्बर का सामन्त मेवाड का सेनापति होगा । तथा ''हरावल'' का नेतृत्व करेगा ।
(हरावल – सेना की पहली टुकडी जो युद्ध करती है । )
(चन्दावल – सेना की अन्तिम टुकडी जो युद्ध करती है ।)
(4) मेवाड के राजा की अनुपस्थिति में सलूम्बर का सामन्त राजधानी को संभालेगा ।

(5) मेवाड के सभी कागज पत्रों पर राजा के साथ–साथ सलूम्बर के सामन्त के भी हस्ताक्षर होंगे ।

प्रारम्भ में चून्डा मोकल का संरक्षक (Patron) था । लेकिन बाद में हंसाबाई के अविश्वास के कारण मेवाड छोडकर मालवा के राजा ''होशंगशाह'' के पास चला गया ।
अब हंसाबाई का भाई ''रणमल'' मोकल का संरक्षक बना
मोकल ने ''एकलिंगजी के मन्दिर की चारदीवारी'' का निर्माण करवाया ।
चित्तौड में समिद्धेश्वर मन्दिर (शिव मन्दिर) का पुनर्निर्माण कराया । यह मन्दिर 'भोज परमार' द्वारा बनवाया गया था । तथा पहले इसका नाम त्रिभुवन नारायण मन्दिर था ।
1433 में ''जीलवाडा'' (राजसंमन्द) नामक स्थान पर मोकल के सेनापति चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मार दिया ।

## (8) राणा कुम्भा (1433–68) 25 साल

- रणमल कुम्भा का संरक्षक था ।
- कुम्भा ने रणमल की सहायता से अपने पिता मोकल की हत्या का बदला लिया ।
- मेवाड दरबार में रणमल का प्रभाव बढ गया था । उसने सिसोदिया के नेता राघवदेव (चून्डा का भाई) जो मालवा गया था, की हत्या करवा दी ।
- हंसाबाई ने चुंडा को वापस बुलाया तथा भारमली रणमल की प्रेमिका की सहायता से रणमल की हत्या कर दी ।

क्योंकि हंसाबाई को आशंका थी कि रणमल कुम्भा को भी मार सकता है ।
रणमल का बेटा जोधा अपने भाईयों के साथ मेवाड से भाग गया तथा बीकानेर के पास काहुनी नामक गाँव में शरण ली ।
चुन्डा ने बाद में मंडोर पर अधिकार कर लिया
(मंडोर – मारवाड की राजधानी)
1453 में कुम्भा और जोधा के बीच ''आंवल – बांवल की सन्धि'' हुई ।
इस संधि द्वारा जोधा को मन्डोर (मारवाड की राजधानी) वापस दे दिया गया ।
सोजत (पाली) को मेवाड में मारवाड की सीमा बनाया गया,
इस सन्धि द्वारा कुम्भा ने अपनी कूटनीति के माध्यम से मारवाड को मित्र राज्य बना लिया ।

### कुम्भा के शासनकाल के दौरान घटनाक्रम :

सारंगपुर का युद्ध (1437 ई.) (विजयस्तम्भ इसी दौरान बना)
कुम्भा VS महमूद खिलजी (मालवा M.P)
कारण : महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी । इस युद्ध में कुम्भा जीत गया तथा जीत की याद में ''विजयस्तम्भ'' बनवाया ।

इसके बाद खिलजी, कुतुबुद्दीन शाह (गुजरात) के पास भाग गया ।
चाम्पानेर की सन्धि – (1456)

कुतुबुद्दीन शाह + महमूद खिलजी
(गुजरात) (मालवा)
उद्देश्य : दोनों मिलकर कुम्भा के खिलाफ लडना इस दौरान ''बदनोर का युद्ध''(भीलवाडा) हुआ
कुम्भा ने गुजरात व मालवा की संयुक्त सेना को हराया ।
कुम्भा ने सिरोही के राजा सहसमल देवडा को हराया ।

कुम्भा ने एक अलग युद्ध में नागौर के शम्स खाँ को सहायता दी तथा मुजाहिद खाँ को हराया । (ये दोनों भाई थे) शम्स खाँ भाई मुजाहिद खाँ

## कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :

### स्थापत्य कला

1. विजयस्तम्भ :– ''सारंगपुर युद्ध'' में जीत की याद में चित्तौड के किले में बनवाया था ।

   अन्य नाम: –कीर्ति स्तम्भ (कुम्भा की कीर्ति को बढाने वाला)
   - विष्णु ध्वज (विष्णु भगवान को समर्पित)
   - गरूड ध्वज (गरूड – विष्णु का वाहन)
   - मूर्तियों का अजायबघर
     (इसमें 9 मंजिल में से 8वी मंजिल को छोडकर सभी में भारतीय देवी – देवताओं की मूर्तियाँ है)
   - भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष
     यह 9 मंजिला इमारत है
     लम्बाई–चौडाई :– $122 \times 30\ (feet)$
     वास्तुकार :– जैता (पिता), पूंजा, पोमा, नापा (पुत्र)
   - विजयस्तम्भ में 3वी मंजिल में 9 बार ''अरबी भाषा'' में अल्लाह लिखा हुआ है ।
   –''स्वरूप सिंह'' ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था ।
   - यह राजस्थान पुलिस व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिन्ह है ।
   - राजस्थान की पहली इमारत जिस पर डाक टिकट जारी हुआ था ।
   - ''जेम्स टॉड'' ने विजयस्तम्भ की तुलना ''कुतुबमीनार'' से की ।
   - ''फर्ग्यूसन'' ने विजयस्तम्भ की तुलना रोम के ''टार्जन टावर'' से की ।

जैन कीर्ति स्तम्भ: (आदिनाथ स्तम्भ)
12 वीं शताब्दी में जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने बनवाया
7 मंजिला इमारत है ।
यह भगवान आदिनाथ (जैन के 1st भगवान) को समर्पित है ।
कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति के लेखक – अत्रि, महेश